श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

वर्ष : ९३

मई २०२१

अंक : ५

श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर

www.krishnapranami.org

महारानी बाईजीराजजीका ३७८ वां प्रकट्य महोत्सव दिनांक २७/०४/२०२१

श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

संस्थापक : ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धनीदासजी महाराज

वि . सं : २०७८ निजानन्दाब्द : ४३८ बुद्धजी शाका : ३४३

वर्ष : १३ मई २०२१ अंक : ०५

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामित्व	}	जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज
मुद्रण एवं प्रकाशन स्थल	}	श्री ५ नवतनपुरी धाम खीजड़ा मन्दिर जामनगर - ३६१ ००१ (गुजरात) भारत
सम्पादक	:	स्वामी श्री लक्ष्मणदेवजी महाराज श्री कनकराय व्यास

पता : श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका, श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर 361 001

फोन : (0288) 267 2829 मो : 08511226600

E-mail : patrika@krishnapranami.org / navtanpuri@gmail.com

Website : www.krishnapranami.org / patrika

छत्रसाल जयन्ती

जेष्ठ शुक्ल तृतीया महाराजा छत्रसालजीकी जन्म जयन्ती है । इस वर्ष यह पावन दिन दिनांक १३ जून २०२१ को है । प्रणामी समाजमें छत्रसाल जयन्ती हर्ष और उल्लासके साथ मनायी जाती है । श्री छत्रसालजी राजा होते हुए भी महामति श्री प्राणनाथजीके प्रति पूर्णत: समर्पित सेवक थे । उनके मनमें अहंकारका लेशमात्र भी स्थान नहीं था । वे सदैव महामति श्री प्राणनाथजीकी सेवामें समर्पित थे । छत्रसाल जयन्ती वास्तवमें धर्मके प्रति, समाजके प्रति, राष्ट्रके प्रति, गुरुके प्रति समर्पणका दिन है । हमारे हृदयमें ऐसी भावना प्रकट होगी तो हमारा जीवन धन्य होगा ।

महाराजा छत्रसाल जयन्ती दिनांक १३/०६/२०२१ के अवसर पर उन्हें कोटिश: प्रणाम । सभीको श्री छत्रसाल महाराजके प्राकट्यकी हार्दिक वधाई । – आचार्यश्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

श्री तारतम रसास्वाद

(महामति श्री प्राणनाथजी प्रणीत श्री तारतम सागरके किरन्तन ग्रन्थका यह १६ वाँ प्रकरण है ।)

(राग -श्री)

दुख रे प्यारो मेरे प्रानको ।
सो मैं छोड्यो क्योंकर जाए, जो मैं लियो है बुलाए ॥ १

संसारके दुःख मुझे प्राणप्रिय लगते हैं, उन्हें मैं कैसे छोड़ सकता हूँ, उनको तो मैंने ही बुलाया है।

इन अवसर दुख पाइए, और कहा चाहिएत है तोहे ।
दुख बिना चरनकमलको, सखी कबहूं न मिलिया कोए ॥ २

यदि इस जीवनमें (परमात्माका स्मरण करवाने) दुःख प्राप्त हो जाएँ, तो फिर इसके अतिरिक्त तुझे और क्या चाहिए ? हे सखी ! दुःखका अनुभव किए बिना किसीको भी परमात्माके चरणकमल प्राप्त नहीं हुए हैं।

जिन सुख पीउजी ना मिले, सो सुख देऊं रे जलाए ।
जिन दुख मेरा पीउ मिले, मैं सो दुख लेऊं बुलाए ॥ ३

संसारके जिन मायाजन्य सुखको भोगनेसे परमात्माका मिलन न हो सके, उन सुखोंको मैं जला देता हूँ और जिन दुःखोंको सहन करने पर मेरे प्रियतम परमात्माका मिलन हो सकता हो ऐसे सब दुःखोंको मैं बुला कर उन्हें स्वीकार करता हूँ।

दुख तो हमारो आहार है, औरन को दुख खाए ।
दुखके भागे सब फिरे, कोई बिरला साध निबाहे ॥ ४

ऐसे दुःख तो हमारे(आत्माके) आहार(ग्राह्य) हैं, जबकि अन्य लोगोंके लिए ये दुःख खानेको दौड़ते हैं। इसलिए सब लोग दुःखोंसे भागते फिरते हैं, कोई बिरला साधु पुरुष ही इनका निर्वहन(धारण) कर पाता है।

दुखको निबाहू ना मिले, और सुखको तो सब ब्रह्मांड ।
इन झूठे दुखथें भागके, खोवत सुख अखंड ॥५

दुःखका निर्वहन करने (निभाने-सहने) वाले कोई नहीं मिलते हैं और सुखोंका तो पूरा ब्रह्माण्ड ही चाहक है। ऐसे अल्पज्ञ लोग इन झूठे दुःखोंसे(दूर) भाग कर अखण्ड सुखोंको खो रहे हैं।

दुखकी प्यारी प्यारी पीउकी, तुम पूछो वेद पुरान ।
ए दुख मोहीको भला, जो देत हैं अपनी जान ॥६

ऐसे दुःखोंका प्रेमसे स्वागत करनेवाली ब्रह्मसृष्टि आत्मायें अपने प्रियतम परमात्माकी प्यारी होती है। वेद, पुराण आदि धर्मग्रन्थ इसके साक्षी हैं। इसलिए संसारके ये दुःख मुझे प्रिय लगते हैं क्योंकि प्रियतम परमात्मा अपनी अंगना जानकर मुझे ऐसे दुःख प्रदान करते हैं।

ता कारन दुख देत हैं, दुख बिना नींद न जाए ।
जिन अवसर मेरा पीउ मिले, सो अवसर नींद गमाए ॥७

इसलिए प्रियतम धनी अपनी प्रिय आत्माओंको दुःख देते हैं कि संसारिक दुःखोंका अनुभव किए बिना अज्ञानरूपी निद्रा दूर नहीं होती है। जिन दुःखोंके द्वारा इसी जीवनमें प्रियतमका मिलन होता है, ऐसे अवसरको हम अज्ञानरूपी निद्राके कारण गँवा देते हैं।

नींद बुरी या भरम की, भरम तो भई आडी पाल ।
वह दुख देत जलाए के, जो आडी भई अपने लाल ॥८

अज्ञानरूपी भ्रमकी नींद तो बड़ी बुरी है, क्योंकि यह नींद धनीको प्राप्त करनेमें व्यवधान बनी हुई है। जो भ्रान्ति (नींद) प्रिय मिलनके लिए अवरोधक सिद्ध होती है, उसको विरहका दुःख जलाकर राख कर देता है।

नींद निगोडी ना उडी, जो गई जीवको खाए ।
रात दिन अगनी जले, तब जाए नींद उडाए ॥९

यह दुष्ट(निगोडी) नींद टलती नहीं है। यह तो जीव (पूरे जीवन)

को ही निगल गई है (पूरा जीवन इसी नींदमें व्यर्थ व्यतीत हो रहा है)। जब रात-दिन विरहकी अग्नि जलेगी, तभी यह नींद उड़ जाएगी।

इन सुपने के दुखसे जिन डरो, दुख बदले सत सुख ।
अपने मासूकसों नेहडा, तोको देयगो बनाएके दुख ॥१०

इसलिए इस स्वप्नवत् संसारके झूठे दुःखोंसे डरो नहीं क्योंकि इन्हीं दुःखोंके द्वारा धामधनीका अखण्ड सुख प्राप्त होगा। अपने प्रियतम धनीका अखण्ड प्रेम तुम्हें दुःखके माध्यमसे ही तो प्राप्त होगा।

ता सुखको कहा कीजिए, जो देखलावे धरमराए ।
मैं वह दुख मांगू पीउपें, जो पीउसों पल पल रंग चड़ाए ॥११

संसारके इन मायावी झूठे सुखोंको लेकर क्या करना जो धर्मराज (यमलोक) का मार्ग दिखाते हैं। इसलिए मैं तो प्रियतमसे इस प्रकारके दुःख मागूँ, जिनके द्वारा प्रियतमके प्रेममें हर क्षण वृद्धि होती रहे।

दुख सब सुपनो होए गयो, अखंड सुख भोर भयो ।
महामत खेले अपने लालसों, जो अक्षरातीत कह्यो ॥१२

मेरे लिए अब जगतके सब दुःख स्वप्नके समान उड़ गए और अखण्ड सुखका प्रभात उदय हो गया है। महामति अब अपने लाल(पूर्णब्रह्म परमात्मा)के साथ लीला विलास करते हैं जो क्षर अक्षरसे भी पार अक्षरातीत कहे गए हैं।

पत्रिकाके ग्राहकोंको सूचना

यह पत्रिका प्रत्येक महिनाके १६ तारीख पोष्ट की जाती है।

जब भी आप पत्रिकाके ग्राहक बनते हैं उसके दूसरे महिनेसे आपको नियमित रूपसे पत्रिका प्राप्त होगी। आप जब पत्रिकाके नयें ग्राहक बनेंगे उसी समय आपको ग्राहक संख्या दी जाती है। यह ग्राहक संख्या आपकी रसीदमें भी छपी होगी उसको आप याद रखें या रसीद सम्हालके रखें। जब भी आपको पत्रिका रिन्यु करनी हो या पत्रिका प्राप्त न होने पर पुनः मगवाना हो आप अपने नाम और ग्राहक नंबरके साथ पत्रिका व्यवस्थापकसे संपर्क करें। **संपर्क सूत्र : श्री कुनाल व्यास : 9374122228 / 8511226600**

सुन्दरसाथ

अनन्तश्री विभूषित जगद्‌गुरु आचार्य श्री कृष्णमणिजी महाराज

सुन्दरसाथ शब्द बड़ा ही प्यारा है। जिसका साथ ही सुन्दर हो, उत्तम हो उसका उत्कर्ष अवश्य होगा। शास्त्रोंमें जिस पवित्र आत्माके लिए सुन्दरी सखी कहा गया है ऐसे श्री देवचन्द्रजी महाराजको स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्माने प्रकट होकर कहा, **नाम तुम्हारा बाई सुन्दर** अर्थात् तुम्हारा नाम सुन्दरबाई है, तुम परमधामकी सखी हो तुम्हारे अन्दर श्रीश्यामाजी अवतरित हुई हैं तुम्हें ब्रह्मात्माओंको जागृत करना है...आदि आदि। यह कहकर धामधनी स्वयं उनके हृदयमें विराजमान हुए। इसीलिए श्री प्राणनाथजीने कहा,

श्री सुन्दरबाई श्यामाजी अवतार, पूरण आवेश दियो आधार ।

सुन्दरसाथजी ! श्री सुन्दरबाई श्री श्यामाजीके अवतार हैं। धामधनीने उन्हें पूर्ण आवेश प्रदान किया है। श्री देवचन्द्रजीकी आत्माको सुन्दरी सखी या सुन्दरबाई कहा गया है। उन्होंने वर्षोंतक साधनाएँ की और चालीस वर्षकी आयुमें पूर्णब्रह्म परमात्माके दर्शन प्राप्त किए। तब उन्हें अपनी पहचान हुई, पूर्णब्रह्मको पहचाना और पातालसे लेकर परमधाम पर्यन्तका अनुभव किया। पूर्णब्रह्म परमात्मा श्रीराजजीकी आज्ञाके अनुसार उन्होंने ब्रह्मात्माओंकी जागनी आरंभ की। जो आत्माएँ उनके द्वारा जागृत होती गयी उन्हें सुन्दरसाथ कहा गया। इस प्रकार **सुन्दरसाथ** शब्द अब समुदायवाची बन गया। श्री देवचन्द्रजी महाराजके द्वारा प्रकट हुआ सम्प्रदाय **निजानन्द सम्प्रदाय** अर्थात् **श्रीकृष्ण प्रणामी धर्मके** नामसे प्रसिद्ध हुआ। आज इस सम्प्रदायमें दीक्षित व्यक्तिको **सुन्दरसाथ** कहा जाता है।

जिसका हृदय सुन्दर अर्थात् पवित्र हो वही सुन्दरसाथ कहलानेका अधिकारी है। सुन्दरसाथको ब्रह्मसृष्टि कहा है। ब्रह्मसृष्टि ब्रह्मके अंग है। परमधाममें **श्याम श्यामाजी साथजी** अर्थात् श्याम, श्यामाजी एवं सुन्दरसाथ(ब्रह्मसृष्टि) की लीलाएँ होती हैं। महामति श्री प्राणनाथजीने ब्रह्मसृष्टिके लक्षण बताए हैं। उनमेंसे थोड़े लक्षणोंकी चर्चा यहाँपर करते हैं। वे कहते हैं,

पार वतन जो सुहागिनी, ताकी नेक कहूँ पेहेचान ।
जो कदी भूली माया मिने, तो भी चरण तले निदान ॥

परमधामकी आत्माओंकी विशेषता यह है कि वे मायामें भूल भी जायें तो भी उनका ध्यान अपने धनीकी ओर ही रहता है। मायामें होती हुई भी वे परमात्माकी खोज करती हैं। उन्हें मायाके सुखोंसे तृप्ति नहीं होती है। वे सदैव परमधामका अखण्ड सुख चाहती हैं। स्वयं जागृत होने पर वे दूसरोंको भी जागृत करेंगी किन्तु यदि स्वयं जागृत नहीं हुई होगी तो भी जागृतिके लिए प्रयत्नशील रहेगी। उनके लिए पुनः कहा है,

सोई सुहागिन धाममें, जो करसी इत रोसन ।

ऐसी आत्माओंको सुहागिनी कहा गया है। सुहागिनीका अर्थ है सुहागवाली अर्थात् जिनको पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजीका सुहाग प्राप्त है, जो निरन्तर अपने स्वामी पूर्णब्रह्म परमात्माके साथका अनुभव करती हैं। यहाँ पर सुहागिनीका तात्पर्य जागृत आत्मासे है। जो ब्रह्मात्मा जागृत होगी वह दूसरोंको भी जागृत करेगी और परमधामके दिव्य ज्ञान एवं प्रेम लक्षणा भक्ति द्वारा इस जगतको ही प्रकाशित करेगी।

उनके रहन-सहन, आहार-विहारके लिए कहा है,

रेहेवे निर्गुण होए के, और आहार भी निरगुण ।
साफ दिल सुहागनी, कबहुं न दुखावे किन ॥

उनका रहन सहन सादगीपूर्ण होगा । वे दूसरोंको दिखानेके लिए नहीं अपितु श्रीराजजीको रिझानेके लिए काम करेंगी । भौतिक आकर्षण उनको आकृष्ट नहीं कर पाते हैं क्योंकि भौतिक वैभवसे करोड़ों गुना मूल्यवान परमधामका वैभव उनको प्राप्त हुआ है । उनका आहार भी सात्विक होगा । सात्विक आहारके विषयमें बहुत कुछ समझने जैसा है । क्योंकि आज आहारकी अशुद्धिके कारण अनेक अनर्थ हो रहे हैं । आहार शुद्ध होने पर वैमनश्यता कम हो जाएगी । सन्तोंने ठीक ही कहा है,

जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन ।

मनुष्य जैसा अन्न खाएगा उसीके आधार पर उसका मन विकसित होगा । इसलिए आहारकी शुद्धता पर ध्यान देना चाहिए । सामान्यतया आहारको दो प्रकारसे देखा जा सकता है । एक है स्थूल आहार एवं दूसरा है सूक्ष्म आहार । सर्वप्रथम स्थूल आहारकी बात करते हैं । स्थूल आहार चार प्रकारसे लिया जाता है । **(१) भोज्य**- चबाकर आहार लिया जाय उसे भोज्य कहते हैं **(२) पेय**- सरलतासे पान किया जाय वैसे तरल पदार्थको पेय कहते हैं । जैसे दूध जल आदि **(३) चोष्य**- चूसकर लिया जाय ऐसे आहारको चोष्य कहते हैं । जैसे गन्ना, टॉफी आदि । **(४) लेह्य**- चाटकर लिया जाय ऐसे आहारको लेह्य कहते हैं । जैसे चटनी, शहद आदि । सामान्यतया यह स्थूल आहार होनेसे इसे मुखके द्वारा लिया जाता है और रसना (जिह्वा) इसका आस्वादन करती है । ऐसा स्थूल आहार भी शुद्ध होना आवश्यक है ।

इसी प्रकार दूसरा आहार है सूक्ष्म, उसे ज्ञानेन्द्रियोंके द्वारा ग्रहण किया जाता है । जैसे **कान** (श्रवण इन्द्रिय) से ग्रहण किया जाता है शब्द, ध्वनि आदि । **आँख** (नेत्र) से ग्रहण किया जाता है दृश्य अर्थात् भिन्न भिन्न प्रकारके रूप । इसी प्रकार **घ्राण इन्द्रिय**(नाक)से गन्ध ग्रहण

किया जाता है और **त्वक् इन्द्रिय** (चमड़ी)के द्वारा स्पर्श ग्रहण होता है। **रसना** तो रस ग्रहण करती ही है। इन पाँचों ज्ञानेन्द्रियोंके द्वारा सूक्ष्म आहार ग्रहण होता है। उसीके आधार पर संस्कार बनते हैं। यह सूक्ष्म आहार भी शुद्ध होना चाहिए। इसीलिए वेदोंमें कहा है,

भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः भद्रं पश्येम अक्षभिः ।

हम अपने कानोंसे अच्छी बातें सुनें, अपनी आँखोंसे अच्छे दृश्य देखें, अच्छा रूप देखें। इसीलिए परमात्माके भजन, धून, कीर्तन एवं ज्ञान उपदेश श्रवण करनेके लिए कहा गया है और मन्दिरमें जाकर परमात्माके प्रतीक (मूर्ति) तथा सन्तगुरुजनों एवं श्रेष्ठजनोंके दर्शन करनेकी बात कही गई है।

स्थूल एवं सूक्ष्म दोनों प्रकारके आहारका असर स्थूल शरीरके साथ-साथ मन तथा अन्तःकरण पर पड़ता है। यदि हमारा आहार ही ठीक नहीं होगा तो हमारा शरीर एवं मन कैसे ठीक होंगे। यदि हम शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकारसे अस्वस्थ होंगे तो हमारी स्थिति कैसी होगी ? हम अशान्त होकर रोते हुए जीवन यापन करेंगे।

आप विचार करें, क्या आज हमारी यही स्थिति नहीं है ? आहारकी अशुद्धिके कारण ही हमारा पतन हो रहा है एवं हम और तीव्र गतिसे सर्वनाशकी ओर आगे बढ़ रहे हैं। इसीलिए अध्यात्म मार्गके पथिकोंके लिए आहारशुद्धिकी बात कही गई है। आहार शुद्ध होने पर एक ओर हमारा शरीर ठीक रहेगा तो दूसरी ओर मन, बुद्धि एवं चित्तमें भी शुद्धता आएगी। इतना होने पर हमें स्वयंकी अर्थात् आत्माकी पहचान होनेमें सुगमता होगी। तभी हम पूर्णरूपसे स्वस्थ होंगे। शास्त्रोंमें कहा है,

आहारशुद्धौ सत्त्वशद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवास्मृतिः

आहारशुद्धिसे सत्त्वशुद्धि होगी अर्थात् अन्तःकरण पवित्र होंगे

तभी अपनी स्मृति स्थिर होगी अर्थात् हमें अपने स्वरूपका-आत्मभावका अनुभव होगा ।

अध्यात्म क्षेत्रमें आगे बढ़नेवालोंके लिए सर्वप्रथम शुद्धिकी बात सिखायी जाती है । जो श्रेष्ठ आत्माएँ होंगी वे स्वतः शुद्धताकी ओर प्रवृत्त होंगी ।

ब्रह्मात्माओंके लिए तो विशेषरूपसे कहा गया है कि उनका आहार शुद्ध होना चाहिए अर्थात् उनका आहार ऐसा होना चाहिए जो उन्हें किसी भी भौतिक गुणोंके प्रति आकृष्ट न कर पाए । शुद्ध आहार होने पर यह सब संभव है । इसलिए आहार शुद्ध होना चाहिए ।

इतना ही नहीं **साफ दिल सुहागिनी** अर्थात् सुहागिनी आत्माओंका हृदय भी पवित्र होना चाहिए । उनके हृदयमें छल, कपट, ईर्ष्या द्वेष जैसे भावोंका प्रभुत्व नहीं होना चाहिए । जो आत्माएँ जागृत होंगी वे इन भावोंसे ऊपर उठी हुई होंगी । ऐसी आत्माएँ **कबहूँ न दुःखावे किन** अर्थात् कभी भी किसीका दिल नहीं दुखाती हैं । वे किसीको भी किसी भी प्रकारसे आघात नहीं पहुँचाती हैं । वस्तुतः अहिंसाका भाव ही यही है । इसीलिए अहिंसाको परम धर्म माना है, **अहिंसा परमो धर्मः ।**

सुन्दरसाथजी ! अब हम स्वयं विचार करें कि हमारी क्या स्थिति है ? हम तथाकथित सुन्दरसाथ हैं या यथार्थमें सुन्दरसाथ हैं। हमें अपनी स्थितिको समझनेके लिए किसी दूसरेको पूछनेकी आवश्यकता ही नहीं है हम स्वयं इस पर विचार कर अपना निर्णय ले सकते हैं । यदि हम अभी तक मात्र सुन्दरसाथ कहलाते आए हों तो अब यथार्थमें सुन्दरसाथ बनकर दिखायें । इसीमें हमारा कल्याण है ।

- सनातन सुखसे साभार

बुन्देलकुल भूषण महाराजा छत्रसाल

ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धर्मदासजी महाराज

श्री छत्रसाल महाराज सुकवि, धीर, ध्यानी, गुणी, ज्ञानी, पंडितराज, वीर शिरोमणि, नृपति है। अखिल हिन्दूस्थानके हिन्दूत्व रक्षक बुन्देल खण्ड केसरी वीर महाराजाश्री छत्रसालजी भारतके एक गौरव सूर्य ही थे।

आज हिन्दूत्व और भारतीय संस्कृतिका शिर उच्चतम है तो इन्हीं विश्व वन्दनीय महापुरुष द्वारा है। अखिलेश्वर जगन्नियता, जगदाधार, परमात्माकी वेद वाणी भी महिमापूर्ण इन(महापुरुष)से सम्बन्ध रखती है। क्योंकि इन्हें(वेदवाणी) भी ऐसे(महापुरुष)के अभावसे लोप होनेका भय रहता है। इस लिये हिन्दू धर्मकी एकमात्र सम्पत्तिरूप वेदज्ञानके भी यही रक्षक हैं।

आधुनिक वीसवीं शताब्दीमें भी ब्राह्मणोंमें वेदाभिमान, क्षत्रियोंमें अङ्गबल, स्वामित्व(राजतन्त्र) शासक अभिमान है तो, इन्हीं महापुरुषके प्रतापका फल है।

भारत भूमिमें ऐसे असंख्य महापुरुषोंने जन्म लिया है। विचारशील मनुष्य ऐतिहासिक ग्रन्थोंको देखेंगे तो उन्हें ज्ञात होगा कि महाराजा छत्रसालजीका जीवन किसी भी महापुरुषसे कम नहीं अपितु विशेष ही है। यों तो भारत-भूमिके रक्षार्थ आत्मसमर्पण यावदर्थके साथ बलिदान देनेवाले महापुरुषोंकी संख्या कम नहीं है। जैसे कि महाराणा प्रताप, गुरु गोविन्दसिंह, छत्रपति शिवाजी आदि अनेकों शूरवीर महापुरुषोंने सर्वस्व समर्पण कर मातृभूमिकी रक्षा की है।

गुरु गोविंदसिंहजी, छत्रपति शिवाजी एवं महाराजा छत्रसालजी इन तीनों महावीरोंने ही समकालीन सम्राट औरङ्गजेबके दारूण

अत्याचारोंसे हिन्दुत्वकी इतिश्री समयमें कटिबद्ध हो रणक्षेत्रमें मुगलोंका सामना कर गौ, ब्रह्मण, वेदधर्मकी अपूर्व रक्षा की है ।

उस समय साधुओंकी सिद्धि, सन्यासियोंकी चतुर्थी भूमिका, ब्रह्मभावना, **सर्व खल्विदं** ब्रह्मकी ऐक्य दृष्टि, क्रियाकाण्डियोंकी कर्मनिष्ठा, ब्राह्मणोंका ब्राह्मणत्व, सति साध्वीकी सत्यता कुछ भी काम नहीं आई, यहाँ तक कि देवोंमें दैवत भी प्रायः नष्ट सा हो गया था । देव, देवता, अवतार, तीर्थंकरादिकी प्रतिष्ठापूर्वक स्थापित त्रिगुणमयी मूर्तिओंका नाम ले ले कर हस्त पादादि, नेत्र, नासिका प्रभुकल्पित अङ्गको एक एक करके तोड़ा जाता था, उन खण्डित मूर्तियोंको कुवा, वाव, तालावादिमें फेंका जाता था । कही पर सर्वाङ्गसम्पन्न मूर्तियोंको हाथीके पैरों पर बांधकर घसीट घसीटकर अङ्गभङ्ग किया जाता था और मूर्तियोंके टुकडोंसे सड़क बनाई जाती थी ।

उस समय यावत् शुभ कार्य- वेदाध्ययन पठन पाठन यज्ञादि कार्य किंवा देवपूजा विधि जैसे कि शंखध्वनि, वाद्यादिकोंका बजाना, भजनमण्डली, कीर्तनादि, भक्ति, तप आदिका लोप कर दिया गया था । यदि कोई धर्मनिष्ठ व्यक्ति ऐसा किये विना नहीं रहता तो, उसे पकड़कर कैदमें सढ़ा दिया जाता था ।

भारतीय सर्व समाजकी गौरवता अस्ताचलके निकट पहुंच चुकी थी, इसे बचानेके लिये एवं भारतगौरवताकी प्रधान्यताको दिखानेके लिए गर्वभञ्जन परमात्माने वीर क्षत्रियोंको इस पवित्र भारतमें उत्पन्न किया ।

उत्तर भारतमें गुरु गोविन्दसिंहजी, दक्षिणमें शिवाजी महाराज, मध्य भारतमें छत्रसालजी महाराजको जन्म दिया ।

यद्यपि इन तीनों वीरोंका सुयशचारित्र्य विश्वविख्यात है तथापि यहां पर महाराजा श्री छत्रसालजीकी विशेषताओंका मात्र दिग्दर्शन कराया जा रहा है । यों तो महाराजा श्री छत्रसालजीका जगद्उद्धारक

आदर्श जीवन लिखनेसे अन्त नहीं आता, तो भी आधुनिक नवयुवकोंके समक्ष ऐसा पवित्र आदर्श जीवन रखनेसे उनमें नयाँ जोशका प्रादुर्भाव अवश्य होगा, इस भावनासे यत् किञ्चित् लिखनेका प्रयास किया है।

सुन्दरसाथजी ! इसे ध्यानपूर्वक वांचे, मनन करें, जिससे आधुनिक जमानेका वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष आदि भावनाओंसे प्रेरित मनुष्यसे बचनेके लिए, अथवा आत्मरक्षणार्थ साधारण जनको भी मार्ग प्रदर्शित हो, इस लेखमें महाराजा छत्रसालजीकी आर्य गौरवता, एवं पूर्वजन्मकी शिशुवयमें प्रभुप्रेमकी कथा और हिन्दुत्व नीति, धर्मनिष्ठा, विद्वत्ता आदिका सूक्ष्मरूपसे दिग्दर्शन कराया जायेगा।

जब धार्मिक मेदिनीको अत्याचारोंके घनघोर घटाने छा रखा था, उस समय क्षात्रधर्मद्वारा हिन्दू संस्कृतिकी शान रखनेके लिए क्षात्रकुलदीप पञ्चम नृपको परम कृपालु परमात्माने जन्म दिया। बुन्देलवंशका विस्तार इनसे ही माना गया है।

बुन्देल नामकी व्युत्पत्ति इतिहासोंमें इस प्रकार पायी जाती है। विन्ध्याचालमें सुदृढ राज्यस्थापनाके लिए 'पञ्चम' नृपतिने विन्ध्यादेवीके आश्रयमें रहकर घोर तपास्या की, उसका फल स्वरूप नृपतिको देवीका साक्षात्कार हुआ। तब नृपतिने देवीके भेटमें स्वशिर-अर्पणार्थ तीक्ष्ण तरवार द्वारा शिरोच्छेदनके लिए शस्त्रप्रहार किया। उस समय सहसा देवीने नृपतिका हाथ पकड़ लिया, तथापि कुछ चोट आजानेके कारण रक्तबिन्दु टपक पडे, उन विन्दुओंको देखनेपर देवीका करुणामय हृदय भर आया, सहसा देवीने उडुपति चन्द्रमाकी ओर दृष्टिगोचर किया तब चन्द्रमाने देवीकी भावनाको जानकर अमृतकी वर्षा की। अत एव देवीकी अतुलनीय शक्ति और चन्द्रमाकी सुधावृष्टिसे वह विन्दुसमूह एक सुरम्य बालकके रूपमें परिणत हुआ। और इसीसे बुन्देल वंशका विस्तार हुआ।

प्रतापी चंपतरायके सरीवाहन नामक प्रथम पुत्र थे। चंपतरायने हिन्दूधर्मरक्षार्थ, अनेकोंवार मुगलोंका सामना किया। कुछ समय व्यतीत होते सारीवाहन रणक्षेत्रमें जाने योग्य हुए, तब अपने पिताके साथ युद्धमें भाग लेते हुए मुगलोंका सामना करने लगे। एक समय चंपतराय कोई कार्यवश कहीं चले गये थे, उसी समय मौका पाकर मुगलोंने अपने नगरको चारों ओरसे घेर लिया। तब सारीवहनने पिताकी अनुपस्थितिमें भी स्वनगरीरक्षार्थ मुगल सम्राटके सेनानायक, महारथियोंके साथ घोर युद्ध किया, किन्तु अकेले कहांतक सामना कर सकते ? अन्ततः समरशय्याधीन होते हुए वीरगतिको प्राप्त हुए।

वीरपुत्र सारीवाहनने रणभूमिमें स्थूल देहको त्यागकर देवताओंका सत्कार स्वीकार किया, यह सुनकर माता-पिता विरहव्यथासे व्याकुल हो, अधैर्य बन गये ऐसी अवस्थामें एक महान् घटना घटी। गत पुत्रात्माने माता-पिताके धैर्यार्थ स्वप्नमें दिखकर कहा, बुन्देलखण्डको स्वतन्त्र बनानेका कार्य शेष रह गया है, इसके लिए मैं पुनः आपके पुत्ररूपसे प्रगट होकर बुन्देल खण्डको स्वतन्त्र करूंगा। उपर्युक्त घटनाको सत्य करते हुए सारीवाहन पुनः जन्म लेकर महाराजा छत्रसालजीके नामसे प्रसिद्ध हुए।

महाराज छत्रसालजीका जन्म वि. सं. १७०६ जेष्ठ शुक्ल ३ को हुआ था। जन्म होनेके पश्चात् माता-पिताको अत्यन्तानन्द हुआ। क्योंकि, उनके अंगमें राजचिन्ह चिन्हित था। बाल्यावस्थामें ही आपके अन्दर दैवी तेज झलकता था, अत एव पिता चम्पतरायको यह निश्चत हो गया कि, बुन्देलखण्डका राज्यशासन यही करेगा और बुन्देलवंशका गौरवसूर्य भी यही कहलायेगा। परंतु अति क्रान्तिका समय होनेके कारण मुगलोंके हाथसे नवल शिशुको सुरक्षित रखना कठिन ही नहीं अपितु असम्भवसा था।

'वने विसर्जितमपि दैवरक्षितं तिष्ठति' तद्वत् महाराजा छत्रसालजी दिनोदिन चढती कलासे भरपूर होते गये। कुछ ही दिनोंके पश्चात् बहादुर चम्पतराय मुगलोंका सामना करते हुए, रुग्णावस्थाको प्राप्त हुए। मुगल सम्राटके सेनानायकोंने यह समाचार सुनते ही उन्हें पकडनेके लिये चारों ओरसे घेर लिया। उस समय सती कलाकुँवरी चम्पतपत्नीको यह विचार आया कि पतिदेव योंही दिनोंदिन अस्वस्थ रोगग्रस्त होते जा रहे हैं, इधर अनेक मुगलोंके महारथियोंने घेर रखा है।

आत्मरक्षाके लिये सेना, शस्त्रबलके अतिरिक्त दूसरा कोई भी सहायक नहीं हो सकता। इस समय वीरोंके अनुकरण सिवाय वीर क्षत्रियोंके लिये यशकारी भी कोई नहीं होता। इसलिए पति पत्नी दोनोंने ही परस्परके प्रहारोंसे पाञ्चभौतिक शरीरका परित्याग किया ऐसे कथन भी ऐतिहासिक ग्रन्थोंमें मिलते हैं।

लाल कविका कहना है कि, वीर क्षत्रियाणी कलाकुँवरीने सोचा पतिदेवके जानेके पश्चात् मेरा सतीत्व रक्षण होना असम्भव होगा, अतः मुगलोंके चंगुलनमें पड़नेसे पूर्व ही पतिदेवके नामपर इस शरीरको स्वहस्त प्रहारसे छेदनकर त्याग दूँ तो मेरे लिए कल्याणकारक होगा। और किया भी ऐसा ही। तत्पश्चात् चम्पतराय भी इस नश्वर विश्वनिधि-मृत्युसे तर गये। यथा,

॥ छन्द ॥

दै दै घाउ मरी ठकुरानी, चंपतिराइ दगा तब जानीं ।
यह संसार तुच्छ निरधार्‌यौ, मारि कटारिन उदर बिदार्‌यौ ॥
चले विमान बैठि सँग दोऊ, जै बोलत सुरपुर सब कोऊ ।
धनी चम्पति तुम राख्यौ पानी, धनी धनी कलाकुँवरि ठकुरानी ॥

(लाल क. छ. प्र. अ. ८)

इतिहासको देखनेसे विदित होता है कि महाराजा छत्रसालजीको मामाके वहाँ छोड़ा था। मौसालमें छोड़नेका कारण यही था कि जब

चंपतरायके प्रति मुगलोंका आक्रमण होता था, तब पिताके साथ छत्रसालजी बाल्य वस्थामें रणभूमिमें उतर पड़ते थे। इस लिये चंपतरायने सोचा कि, पुत्र छत्रसालके अन्दर बाल्यावस्थासे ही क्षत्रिय वीरता छलक पडती है, अतः एव इन्हें ऐसी जगह पर छोड़ आवें जहां असुर मिले ही नहीं। क्योंकि, मुगलोंको देखने मात्रसे छत्रसालके अन्दरसे वीरता इस प्रकार उफन आति थी, जिस तरह तुफानी बकरेको देखने पर सिंह। फिर अपने राज्यपर होनेवाले मुगल आक्रमणको वीर छत्रसाल किस प्रकार सहन करेगा ? ऐसा विचारकर छत्रसालको बालवयमें मौसाल पहुंचा दिया था।

चम्पतरायके देहान्तके समाचार सुनने पर वे अतिशय दुःखी हुए। और पितृराज्य स्थिर करनेकी चिन्ता करने लगे। योंतो चंपतरायके पांच पुत्र थे, १. सारीवहन २. अंगदराय ३. रतनशाह ४. छत्रसालजी ५. गोपाल। इनमेंसे सारी वाहन, पूर्व ही परलोकवासी हो गये थे। रतन शाह और अंगदराय इन दोनोंका पितृराज्यशासन प्रति विशेष ध्यान नहीं था। और गोपाल छोटे ही थे इस लिए राज्यभार श्री छत्रसालजीने उठाया।

महाराजा श्री छत्रसालजी परमधामकी बारह हजार शक्तियोंमेंसे अग्रगण्य माने जाते थे। आपको महामति श्री प्राणनाथजीने ब्रह्म शक्ति साकुण्डलकी वासना माना है। ''**ब्रह्मशक्तिर्ब्रह्मैव भवति शक्तिः शक्तिमतो भेदो दृश्यते न कदाचन**'' ब्रह्ममें कितनी शक्ति हैं ? इसका उत्तर है अनन्त। इसी कारणसे महाराजा छत्रसालजीके अन्दर अनन्त शक्ति, विक्रम एवं विशेषतायें होनेके कारण, आपका विशेष महत्त्व है, इसमें सन्देह नहीं है।

इतिहासको देखनेसे पता लगता है कि, आप बाल्यावस्थासे ही भक्ति-ज्ञानसे भरपूर थे। बाल और पौगंडी वयतक क्षात्र धर्मका पूर्णतया पालन करते हुये, और पलटमें पूर्वजोंका कृत्य चारित्र्य

ख्याल करते छत्रसालजी आगे बढे। चंपतरायके देहावसन पश्चात् मातृभूमि बुंदेलखंडका राज्यभार छत्रसालके शिरपर आ पड़ा। शूरवीर क्षत्री तो आप थे ही, ऐसे ही बाहुबली भी थे। तथापि राज्यसुरक्षितताके लिये धनबल एवं जन बलका भी होना आवश्यक है। इनके खोजमें वर्षों वीत गये। आप युद्धमें लगे रहनेसे भी उत्साहरहित नहिं होते थे। "**विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति**" '**न निश्चितार्थान् विरमन्ति धीराः**' इन वाक्योंका मनन करते हुये कार्यमें लगे रहते थे। परमात्मा उसीको मदद देता है जिसमें उक्त गुण होते हैं। यथा,

उद्योगं साहसं धैर्य बुद्धिशक्तिपराक्रमाः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र दैवं सहायकृत्॥

इस अटल नियमने आपको सहायता दी, साथ ही भाग्यदेव भी उदय हुआ, इससे आपका उत्साह भी बढ़ा। ठीक २ प्रमाणमें धन मिलने पर सेना और सेनानायक एकत्रित हुये। सेनाओंका सुकान बलदीवानने सम्भाला। छत्रसाल और बलदीवान जैसे वीरोंके संचालनमें सेना भी अतिहर्षित हो, निर्भीकतासे कार्य करने लगे। मुगलोंको अनेक वार मार खा खा कर भगना पड़ता था। विशेष मदद लेनेके लिये एक वार छत्रसालजी शिवाजीको मिलनेके लिये महाराष्ट्रमें गये, शिवाजीने उन्हें सेनासे नहीं पर धनसे मदद देना कबूल किया। कारण समझायाकी मेरी सेनासे तुम विजयी बनोगे तो मेरा ही विजय माना जायगा। मुझे तो तुमको परमकृपालु परमात्मा बुँदेलवंश कुलदीपक रणविजयी बना दें इसीमें प्रसन्नता है। महाराजा छत्रसाल वापस आये, अतिप्रसन्न होकर शीघ्रातिशीघ्र सेना भर्ति करने और उत्साहसे काम करनेकी आज्ञा दी। नीति पूर्ण शासन करते मुगलोंसे टक्कर झीलते हुये आपकी अवस्था ३४ वर्षकी हुई।

इस समय स्वामी श्री प्राणनाथजी हिन्दूधर्मरक्षार्थ भारतके क्षत्रिय राजाओंको पूर्वजोंकी इतिहास सुना कर पुकार करते हुए १. कच्छ २. काठियावाड, ३. गुजरात, ४. महाराष्ट्र, ५. मेवाड, ६. मारवाड, ७. दिल्ली उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश आदि क्षेत्रोंमें उपदेश करते हुये, बुँदेलखण्डमें पहुंच जाते हैं।

छत्रसालसे जा मिलते हैं। अर्घपाद्य पूजन निराजन और प्रणामके बाद स्वामी श्री प्राणनाथजी अपना ध्येय छत्रसालको सुनाते हैं। सुनते ही हिन्दूधर्मरक्षार्थ छत्रसालजी कटिबद्ध हो जाते हैं।

बातने सुनि रे बुदेले छत्रसालने, आगे आय खडा ले तलवार ।
सेवाने लई सारी शिर खैंचके, सांईयें किया सेनापति सिरदार ॥

(किरंतन प्रकरण ५७)

महामति श्री प्राणनाथकी छत्रछायामें रहकर छत्रसालने एक ओर अपनी सेनाओंका विस्तार किया तो दूसरी ओर बुन्देलखण्डके छोटेमोटे राज्योंको मुगलोंके आधिपत्यसे छुडाना आरंभ किया। किसी भी कार्यके लिए धनजनकी आवश्यकता पड़ती है। छत्रसालके सामने भी यह समस्या थी कि वे सम्पत्तिके अभावमें सेनाका विस्तार नहीं कर पा रहे थे। सर्वप्रथम तो उन्होंने बलदीवान सहित अपनी सेनाके वरिष्ठ लोगोंमें महामतिके प्रति आस्था जागृत की। इसके लिए एक ओर धर्मचर्चा करवायी तो दूसरी ओर उनके आशीर्वाद प्राप्त कर युद्धमें विजयी बने। इससे सेनाका भी मनोबल बढ़ा और बलदीवानको भी विश्वास हुआ। महामतिके मार्गदर्शनमें युद्धमें विजयी होते हुए भी छत्रसालको धनका अभाव सता रहा था। एक दिन उन्होंने अपनी चिन्ता महामतिको बतायी। तब स्वामीजीने एक निश्चित दिनके लिए छत्रसालको कहा, तुम उस दिन घोड़े पर सवार होकर जितनी भूमिकी परिक्रमा पूरी करोगे उतनी भूमिमें हीरे मिलेंगे। इस प्रकार महामतिने

पन्नाकी भूमिको हीरामयी होनेका आशीर्वाद दिया । तबसे पन्नाकी धरती हीरा उगलने लगी । महामतिने छत्रसालको राजतिलक कर तलवार प्रदान करते हुए आशीर्वाद भी दिया,

छत्ता तेरे राजमें, धक धक धरती होय ।
जित जित घोड़ा मुह करे, तित तित फत्ते होय ॥

महामतिके आशीर्वाद प्राप्तकर छत्रसालने अपना खजाना समृद्ध किया । सैन्यबल बढ़ाया और राज्यका विस्तार करना आरंभ किया । राज्यव्यवस्थाके लिए महामति स्वयं मार्गदर्शन देते थे । इतना ही नहीं युद्धभूमिमें भी महामति सेना नायकके रूपमें गए थे । छत्रसाल एवं उनकी सेना महामतिके नेतृत्त्वमें युद्ध करती थी । इस प्रकार बुन्देल खण्डका विस्तार बढ़ता गया । कहा जाता है कि छत्रसालने मुगलोंके साथ ५२ बार युद्ध किया और सभी युद्धोंमें वे विजयी बने । समर्थ गुरु और समर्थ शिष्य मिलेंगे तो क्या कार्य दुष्कर होगा, सारे कार्य स्वतः सम्पन्न होते जाएँगे । इस प्रकार बुन्देल कुलभूषण महाराजा छत्रसालने बुन्देल खण्डको स्वतन्त्र करवाया । महामति श्री प्राणनाथजीने भी पन्नामें धर्मपीठकी स्थापना कर शेष जीवन वहीं व्यतीत करना निश्चय किया । पन्नाका धर्मपीठ आज श्री ५ पद्मावती पुरी धामके नामसे प्रसिद्ध है ।

बोध पियुष

जो कल्याणकारी हो वही आचरण धर्म है, जो सदैव एक जैसा रहे वही सत्य है, जो लेनेकी इच्छा न रखकर देता है वही दाता है, जो स्नेहसे बंधा हो वही बन्धु है, जो विपत्तिमें साथ दे वही मित्र है ।

जो न्याय मार्गी बनकर पुरुषार्थ करता है वही सत्पुरुष है, जो पिताको यश और सन्तोष प्रदान करे वही पुत्र है, जो गुरुकी शिक्षा पर चलकर उन्नति करे वही शिष्य है, जो शत्रु भाव नहीं रखता वही क्षमाशील है, जिसके मनमें द्वेष-ईर्ष्याका भाव न हो वही अहिंसक है और जो सन्तोषी है वही सर्वसुखी है ।

श्री निजानन्द कथामृत

(ब्रह्मलीन पं. श्री कृष्णदत्त शास्त्री विरचित
निजानन्द चरितामृतसे)

(गतांक पृष्ठ १७ से क्रमश......)

श्रीजीकी अरब यात्रा

श्रीगांगजीभाईके दूसरे भ्राताका नाम खेतसी था। इन्हें देशकी प्रथानुसार छोटे नामसे खेता कहकर पुकारते थे। ये अरब देशमें व्यापारर्थ चले गये थे। इनको गए लगभग पचीस वर्ष हो चुके थे। वहां पर इन्होनें लाखों रूपये कमाये थे, परन्तु घरको आनेका नाम नहीं लेते थे। गांगजीभाईके घरवालोंकी इच्छा थी कि वे यहां पर देशमें आ जाते तो बड़ा अच्छा होता। एक तो साक्षात् स्वरूप श्रीनिजानन्द स्वामीजीके दर्शन और तारतमका लाभ होता और दूसरा, घरके सब लोक एकत्रित हो जाते। एवं विदेशका द्रव्य भी आ जाता तो परमार्थमें लग जाता। इस प्रकार गांगजीभाईके सब कुटुम्बकी शुभनिष्ठात्मक इच्छा देखकर श्री निजानन्द स्वामीजीने खेताभाईको बुलानेका विचार किया।

इधर श्रीनिजानन्द स्वामीजीने देखा कि अभी श्री मिहिरराजजीको किसी लौकिक कार्यमें लगानेकी और आवश्यकता है तो उन्हें अपने पासमें बुलाकर खेताभाईका सम्पूर्ण वृतान्त समझाया और कहा कि तुम जाकर उन्हें समझाकर बुला ले आओ। इस प्रकार श्री निजानन्द स्वामीजीकी आज्ञा पाकर विक्रम सं. १७०३ के फाल्गुन मासमें श्री प्राणनाथजी अरब देशके लिये रवाना हुए। उस समय आजकलके जैसे जहाज नहीं थे। अतः वसन्त ऋतुके शान्त समुद्रमें लोग यात्रा किया करते थे। श्री प्राणनाथजी भी इसी मौसममें यहांसे रवाना हुए और ४० दिनके अन्दर अरब जा पहुंचे।

वहां पर जाकर खेताभाईसे मिले और सब कुशल समाचार कहा। अनन्तर श्री निजानन्द स्वामीजीकी कृपा और कुटुम्बका सम्पूर्ण वृतान्त कह सुनाया। श्रीजीके आनेसे खेताभाईको बड़ी प्रसन्नता हुई। सब कारोबार इनको सौंप दिया और आप निश्चिन्त हो गए।

प्रसंगवश एक दिवस श्रीजी खेताभाईको समझाने लगे कि संसारके सभी मनुष्य प्राय: अपने परिवारके सुख समृद्धिके लिये कमाया करते हैं। आपने लाखोंकी संख्यामें द्रव्योपार्जन किया है परन्तु अभीतक घरकी खबर नहीं ली। न तो आप कभी परिवारजनोंसे मिलने गए और न सम्पत्तिका सदुपयोग किया। आप समझदार होकर भी द्रव्यमें इतने डूब गए कि कभी पुत्र-कलत्र, भाई बन्धुओंके बारेमें सोचा तक नहीं। इस प्रकार विदेशमें अकेले पड़े रहना, उचित नहीं लगता, परमात्माने आपको धन दिया हैं तो देशमें चलकर इसका सदुपयोग करो। परमात्मद्रव्य देवे तो कुछ परमार्थ करना चाहिए। लौकिक तथा अलौकिक फल प्राप्त करनेका साधनरूप यह मनुष्य शरीर बारम्बार नहीं मिलता। परम सौभाग्यकी बात है कि साक्षात् धामधनी स्वरूप श्रीनिजानन्द स्वामीजीकी अपने ऊपर पूर्ण कृपा है, ऐसा अवसर पुन: नही मिलेगा। इसलिए स्वदेश चलनेका शीघ्र प्रबंध कीजिये।

इस प्रकार श्रीजीके बोधपूर्ण वचनोंको सुनकर खेताभाई बहुत प्रसन्न हुए परन्तु संस्कारोंकी दुर्बलताके कारण आत्मामें किसी प्रकारकी जागृति प्राप्त न कर सके। कहने लगे - आप सत्य कहते हो, परन्तु यहां पर बहुत-सा द्रव्य इधर उधर व्यापारमें फंसा हुआ है, अब जहां तक वह एकत्रित न हो जावे, यहांसे चलना कठिन है। इस लिये यह सब कार्य आपको सौंपता हूं। आप फैले हुए द्रव्यको इकठ्ठा करनेका प्रयत्न कीजिये। मुझे देशके लिये चलनेसे इन्कार नहीं है। किन्तु इतना मुझे विश्वास है कि मेरा कमाया हुआ धन किसी परमार्थ कार्यमें नहीं

लग सकेगा। कारण कि मैनें जो कुछ कमाया है, न्याय और परिश्रमसे इकट्ठा नहीं किया। किन्तु नेष्ट द्रव्य जमा किया है। यथा-

हमरी नेष्ट दर्वि है ऐसी, परमारथमें लगै न तैसी।
गिरै जाईकै जलके माहीं, के होई भस्म अग्निके ठांही ॥
कै यह जाई राज घर जाहीं, रहै पाप पापी घर माहीं।
करै संग करनी लै नीकी, उज्वल होई कमाई फीकी ॥

(वृतान्त मु. ३९)

इसलिये हे मिहिरराजजी ! इस द्रव्यकी तीन ही गति हो सकती है। एक तो जलमें डूब जावे, दूसरी अग्निसे जलकर भस्म हो जाये और तीसरी राजदरबारमें चला जावे, परन्तु परमार्थमें काम न आवेगा। क्योंकि उत्तम प्रकारसे उपार्जित द्रव्य ही परमार्थमें लगा करता है, अनुत्तम नहीं। इस प्रकारसे खेताभाईका प्रत्युतर सुनकर श्रीजी बहुत प्रसन्न हुए और यथार्थ भाव समझ गए। परन्तु श्री निजानन्द सदगुरुजीने आपको खेताभाईको बुलानेके लिये भेजा था, अतः उन्हें छोड़कर चले आना उचित नहीं था और इधर जहां तक द्रव्य एकत्रित न हो जावे, खेताभाई चलनेको तैयार नहीं थे। दूसरी बात- खेताभाईने द्रव्य एकत्रित करनेका सम्पूर्ण भार आपके ऊपर ही डाल दिया था। अत एव व्यापार क्षेत्रमें फैले हुए धनको इकट्ठा कर यहांसे निवृत्त होनेके लिये खूब परिश्रम करने लगे। परन्तु वर्षोंसे फैले हुए लाखोंके व्यापारको तत्काल समेट लेना कठिन काम था। बहुत कुछ जल्दी करते रहे फिर भी समेटते समेटते चार वर्ष व्यतीत हो गए तो भी मनोरथ सफल न हो सका।

इस समय बड़ी मुसीबत आ पड़ी, अचानक खेताभाईका शरीर छूट गया। (श्रीजी किसी कार्यवश बाहर गये थे और अभी आ भी नहीं पाये थे। उधर शहरके हाकिमको पता लगते ही उसने बिना पूछे सब धन, माल एवं दुकान पर शील(मुहर) लगा दी। यह जानकर श्रीजीको बड़ा दुःख हुआ। समझ गये कि शहरमें हाकिमकी कुछ नीयत खराब

हैं, परन्तु उस पर अपना कुछ वश न था। बहुत कुछ कहा सुना और समझाया, पर उसने एक न सुनी। अन्तमें श्रीजीने निराश होकर अरबके सुलतानके यहां पर फरियाद करनेका विचार किया। वहां पर जाकर राजासे बात करनेके लिये दो मास तक बहुत कुछ दौड़धूप करते रहे, परन्तु मंत्रीने राजासे मिलने न दिया।

इधर खेताभाईके मृत्युके दो मास बीत गए परन्तु क्रिया कर्म कुछ भी नहीं हो पाया, अतः श्रीजीने विचार किया - यहां पर मन्त्री तो राजासे मिलने देता ही नहीं व्यर्थमें हैरान होनेसे क्या लाभ है ? अतः चलकर खेतभाईका कुछ क्रियाकर्म ही कर डालूं। इस प्रकार निश्चयकर घरको लौटे। मार्गमें पहाड पड़ता था। जब श्रीजी उस मार्गसे चल रहे थे तो एक दिव्य पुरुषने किसी अरब देशवासीके रूपसे श्रीजीको पुकार कर खड़ा किया। कहने लगा- इस प्रकार निराश होकर क्यों लौटे जा रहे हो ?

इस भांति पूछा तो श्रीजीने अपना सम्पूर्ण किस्सा कह सुनाया। जिसे सुनकर उसने एक रूक्का(पत्र) लिख दिया। कहने लगा- तुम घबड़ाना नहीं, जब बादशाह नमाजको निकले तो पल्ला पकड़कर इसे देना और अपनी मुसीबत सुनाना। तुम्हारा सब काम सिद्ध होगा। रूक्केमें ऐसी सख्त बात लिखी थी कि जिसे बांचते ही बादशाहके कान खड़े हो जावें और कुछ बोल न सके। यथा-

करै कजाई खुदा आखरतकों, तब तुमरो दावन मैं झटकों।
हाथ तुमारो खुदाके हाथा, गह्यो छुडाऊं है तुम साथ॥
करौ हिसाब न याको आपा, मेरी चूक धरी सिर छापा।
चेतौ अब मनको करि धीरा, कजा[1] समय होऊं दावन गीरा॥

(वृतान्त मु. ३९)

---

१. इस्लामके धर्मग्रन्थ कुरान और हदीसोंमें लिखा है कि - कयामतके वक्त खुदा ताला इन्साफके तख्तपर बैठकर दुनियाके प्राणियोंके तमाम पुण्य पापका

हे सुलतान ! आज मैं अपनी फरियाद तुम्हारे हाथमें सौंप देता हूं इसका इन्साफ नहीं करोगे तो कयामतके वक्त तुम्हारा पल्ला पकड़ कर खुदाके सामने पाई पाई वसूल करूंगा और इसकी लानत तुम्हारे गलेकी तौक बन जायेगी । इस प्रकार दिव्य पुरुषका लिखा हुआ रूक्का लेकर राज दरबारमें गये । अन्दर तो न जा सके, लेकिन जब बादशाह नमाजके लिए मस्जिदमें जानेको बाहर निकला उस वक्त आपने आगे बढ़कर बादशाहके जामाका दावन(पल्ला) पकड़ कर उस रोक लिया । यह देखते ही अंगरक्षक सिपाही श्रीजीको पकड़नेको दौड़े मगर बादशाहने मना कर दिया । इतनेमें श्रीजीने बादशाहके हाथमें फरियादका रूक्का दे दिया बादशाहके जामाका पल्ला खिचनेसे उसकी कस टूट गई थी, जिसे देखकर बादशाहको बहुत बुरा लगा । परन्तु उसके लिये कुछ बोला नहीं और पूछने लगा कि तुम्हारी क्या फरियाद है जल्दी कहो ।

श्रीजीने कहा - मेरे साथ आपके हाकिमोंने बड़ा दगा किया है । शेखसल्लाने तो मेरा सारा धन माल ही जप्तकर लिया है । आज महीनोंसे धक्का खा रहा हूं कोई सुनता ही नहीं । अब मैं यह सब इन्साफ आपके हाथमें सौंपे देता हूं और कयामतके वक्त जब आपका हाथ खुदाके हाथमें होगा, दावन पकड़के पाई पाई वसूल करूंगा । इस प्रकार कहकर रूक्केमें जो बातें लिखी थीं सम्पूर्ण सुना दी । बादशाह सुनते ही दंग रह गया । अपना हाथ श्रीजीके हाथमेंसे लेकर खुदाके पास दोनों हाथ उठाकर दुआ मांगने लगा । कहने लगा - आज तक बहुतसे फरियाद

फैसला करेगा । जो सख्स अपनी जिन्दगीमें गैरइन्साफ करता है या कुकर्म करता है उनके वे सब पाप कयामतके वक्त उसके गलेके तौक बन जायेंगे । एवं जिन्होनें दूसरेके धन माल छीन लिये हैं या जप्त कर लिये हैं खुदा उन दुश्मनोंका दावन पकड़कर उनके पाई पाई वसूल कर दिलायेगा । जितने पापी होंगे सबको लानत लगेगी और उनके मुख काले हो जायेंगे । जो अच्छे कर्म करनेवाले हैं, उनके मुख सफेद होंगे और खुदाताला शाबाशी देगा । ऐसा मुसलमान लोगोंका विश्वास है, अतएव इस प्रकारकी बातें सुनकर घबराने लगते हैं ।

मेरे पास आये परन्तु खुदाके पास पहुंचा हुआ ऐसा सख्स कोई नहीं मिला। मैनें आजतक ऐसी बातें किसीके मुखसे नहीं सुनी।

श्रीजीने कहा – मैं आपको इतनी तकलीफ हर्गिज न देता, मगर आपके हाकिमोंने मेरे ऊपर बहुत जुल्म गुजार रखा है और मैं जब सब किस्मसे हैरान हो गया हूं, तब आपके पासमें अर्ज की है।

बादशाहने कहा - अब आप धीरज रखिये। खुदा ताला चाहेगा तो आपका ईंसाफ सबसे पहले कल सुबह करूंगा। जो कुछ भी धन माल सूत सामान है, पाई पाई वसूल मिल जायेगा, घबराइये नहीं। आप कल सुबह अदालतमें आइये, ऐसा कहकर बादशाह तो नमाजके लिये चला गया और श्रीजी अपने डेरेमें लौट आये।

(क्रमशः..........)

श्री निजानन्द सम्प्रदाय एवं श्री कृष्ण प्रणामी धर्मका नियम

- आत्म कल्याणके इच्छुक भक्तोंको चाहिए कि वे भक्ति- चिह्न कंठी, मालाको अवश्य धारण करें और स्नानादिके बाद तिलक अवश्य लगावें। हिन्दुत्वके चिह्न चोटी, यज्ञोपवीतका धारण करना भी आवश्यक है।
- पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री कृष्ण प्रदत्त श्री तारतम महामन्त्रका १०८ बार जप अवश्य करना चाहिए। प्रातः सायं संक्षिप्त रूपमें संध्या वंदन – पूजापाठ भी अवश्य करना चाहिए।
- आचार–विचारका पालन करना मानसिक शुद्धिका प्रबल सहायक है, अतः इससे कभी असावधान नहीं रहना चाहिए।
- अभक्ष्य और अपेय पदार्थोंसे सदा पृथक रहना चाहिए।

- परद्रव्यापहरण और परस्त्री गमन महान पाप है, इनसे सदा सावधान रहना चाहिए।
- एक पत्नीव्रतका पालन करते हुए भी जहां तक संभव हो ब्रह्मचर्य धारण करना आवश्यक है, किन्तु निवृत्ति मार्गके अनुसरण करनेवालेको आजीवन ब्रह्मचर्यव्रतका पालन करना चाहिए।
- श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके पथका अनुसरण करनेवाले प्रत्येक व्यक्तिको चाहिए कि वे सत्संग, सदाचार और सत्याचरणको अपना मुख्य कर्तव्य समझे।
- शास्त्र और गुरुके उपदेश पर पूर्ण श्रद्धा होनी चाहिए।
- अपने इष्टदेवकी उपासना अनन्य भावसे करनी चाहिए। लेकिन दूसरेके उपास्य देवोंकी निन्दा भी कभी नहीं करनी चाहिए।
- प्रत्येक सद्ग्रन्थोंको आदरकी दृष्टिसे देखना चाहिए, क्योंकि सभी धार्मिक ग्रन्थोंसे उत्तम शिक्षा मिलती है।
- धर्म प्रचारका उत्तरदायित्व गृहस्था और सन्त दोनों पर है। इसके लिए सदा प्रस्तुत रहना चाहिए।
- मनुष्य मात्रसे भ्रातृत्व और सभ्यताका व्यावहार रखना चाहिए, जिससे परस्पर द्वेष और घृणा उत्पन्न न हो।
- मन, वचन और कर्म किसी भी प्रकारसे किसीसे द्वेष भावना नहीं रखनी चाहिए। अनजानपनमें भी यदि किसीको कुछ हानि हो जाय तो उसीसे अथवा परमात्मासे क्षमा मांगनी चाहिए।
- श्रीमत्तारतम सागर ग्रन्थमें जिन कर्तव्य कर्मोके लिए विधि अथवा निषेधका उल्लेख नहीं है उनके लिए शास्त्रीय मर्यादाका पालन करना आवश्यक है।
- धार्मिक ज्ञानके प्रचारमें किसीसे व्यर्थ वादविवाद नहीं करना चाहिए। दुराग्रहीको समझानेकी चेष्टा भी व्यर्थ ही है।

- धार्मिक तीर्थ और व्रतोंका यथा शक्ति अवश्य पालन करना चाहिए।
- भक्ति और ज्ञानकी दृष्टिसे मनुष्य मात्रके साथ भ्रातृत्व सम्बधका पालन करते हुए भी वर्ण व्यवस्थाका पालन करना आवश्यक है।
- धर्मके साथ गुरु और सन्त सेवाका गहरा सम्बन्ध है। अतः इससे कभी मुख नहीं मोडना चाहिए और सुन्दरसाथके साथ भ्रातृ भावका सम्बन्ध रखना चाहिए।
- सत्य और परिश्रमसे उपार्जित अपने धनका कुछ अंश धर्मकार्यमें अवश्य लगाना चाहिए।
- श्री तारतम सागर ग्रन्थको पूर्णब्रह्म परमात्माका वाङ्मय स्वरूप जानकर इनकी सेवापूजा करनी चाहिए और इनसे उपदिष्ट आज्ञाका पालन करना परम कर्तव्य समझना चाहिए।
- समय - समय पर श्रीमद्भागतका श्रवण करना अति आवश्यक है।

(साभार - विज्ञान सरोवर)

तुलसी पत्तेके फायदे

औषधीय उपयोगकी दृष्टिसे तुलसीकी पत्तियां ज्यादा गुणकारी मानी जाती हैं। इनको सीधे पौधेसे लेकर खा सकते हैं। तुलसीके पत्तोंकी तरह तुलसीके बीजके फायदे भी अनगिनत होते हैं। तुलसीके बीज और पत्तियोंका चूर्ण भी प्रयोग कर सकते हैं। इन पत्तियोंमें कफ वात दोषको कम करने, पाचन शक्ति एवं भूख बढ़ाने और रक्तको शुद्ध करने वाले गुण होते हैं।

बुखार, दिलसे जुड़ी बीमारियां, पेट दर्द, मलेरिया और बैक्टीरियल संक्रमण आदिमें बहुत फायदेमंद हैं। तुलसीके औषधीय गुणोंमें राम तुलसीकी तुलनामें श्याम तुलसीको प्रमुख माना गया है। आइये तुलसीके फायदोंके बारेमें विस्तारसे जानते हैं।

तुलसीके अनेक नाम हैं - तुलसी, सुरसा, देवदुन्दुभि, सुलभा, बहुमंजरी, गौरी, भूतघ्नी, वृन्दा, दोहश, कृष्णतुलसी और रामतुलसी ।

१. कई लोगोंको रातके समय ठीकसे दिखाई नहीं पड़ता है, इस समस्याको रतौंधी कहा जाता है। अगर आप रतौंधीसे पीड़ित हैं तो तुलसीकी पत्तियां आपकेलिए काफी फायदेमंद है। इसके लिए दोसे तीन बूँद तुलसी-पत्र-रसको दिनमें २-३ बार आंखोंमें डालें ।

२. अगर कानमें दर्द है तो तुलसी-पत्र-स्वरसको गर्म करके- बूँद कानमें डालें। इससे कान दर्दसे जल्दी आराम मिलता है। इसी तरह अगर कानके पीछे वाले हिस्सेमें सूजन(कर्णमूलशोथ) है तो इससे आराम पानेके लिए तुलसीके पत्ते तथा एरंडकी कोंपलोंको पीसकर उसमें थोड़ा नमक मिलाकर गुनगुना करके लेप लगाएं।

३. दांत दर्दसे आराम पानेके लिए काली मिर्च और तुलसीके पत्तोंकी गोली बनाकर दांतके नीचे रखनेसे दांतके दर्दसे आराम मिलता है।

४. गलेकी समस्याओंसे आराम पानेके लिए तुलसीके रसको हल्के गुनगुने पानीमें मिलाकर उससे कुल्ला करें। इसके अलावा तुलसी रस-युक्त जलमें हल्दी और सेंधा नमक मिलाकर कुल्ला करनेसे भी मुख, दांत तथा गलेके सब विकार दूर होते हैं।

५. अस्थमाके मरीजों और सूखी खांसीसे पीड़ित लोगोंके लिए भी बहुत गुणकारी हैं। इसकेलिए तुलसीकी मंजरी, सोंठ और शहदको मिला लें और इस मिश्रणको चाटकर खाएं, इसके सेवनसे सूखी खांसी और दमेमें लाभ होता है।

६. पीलिया बीमारीकेलिए २ ग्राम तुलसीके पत्तोंको पीसकर छाछ(तक्र)के साथ मिलाकर पीनेसे पीलियामें लाभ होता है। इसके अलावा तुलसीके पत्तियोंका काढ़ा बनाकर पीनेसे भी पीलियामें आराम मिलता है।

७. तुलसीकेनियमित सेवनसे शरीरकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है जिससे सर्दी-जुकाम और अन्य संक्रामक बीमारियोंसे बचाव होता है। २० ग्राम तुलसी बीज चूर्णमें ४० ग्राम मिश्री मिलाकर पीसकर रख लें। सर्दियोंमें इस मिश्रणकी १ ग्राम मात्राका कुछ दिन सेवन करनेसे शारीरिक कमजोरी दूर होती है, शरीरकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और वात एवं कफसे जुड़े रोगोंसे मुक्ति मिलती है। इसके अलावा ५-१० मिलीग्राम कृष्ण तुलसी-पत्र स्वरसमें दोगुनी मात्रामें गायका गुनगुना घी मिलाकर सेवन करनेसे भी वात और कफसे जुड़े रोगोंसे आराम मिलता है।

८. बुखार है तो तुलसीका पौधासे ७ तुलसीके पत्र तथा ५ लौंग लेकर एक गिलास पानीमें पकाएं। तुलसी पत्र व लौंगको पानीमें डालनेसे पहले टुकड़े कर लें। पानी पकाकर जब आधा शेष रह जाय, तब थोड़ा-सा सेंधानमक डालकर गर्म-गर्म पी जाय। यह काढ़ा पीकर कुछ समयके लिए कमल ओढ़कर पसीना निकाल लें। इससे बुखार तुरन्त उतर जाता है तथा सर्दी, जुकाम एवं खांसी भी ठीक हो जाती है। इस काढ़ेको दिनमें दो बार दो तीन दिन तक ले सकते हैं। (इससे कोरोनासे भी छुटकारा मिलेगा)

९. छोटे बच्चोंको सर्दी जुकाम होने पर तुलसी एवं १-२ बूंद अदरक रसमें शहद मिलाकर चटानेसे बच्चोंका कफ, सर्दी, जुकाम, ठीक हो जाता है। नवजात शिशुको यह अल्प मात्रामें दें।

१०. चोट लगने पर भी तुलसीका उपयोग किया जाता है क्योंकि इसमें रोपण और सूजनको कम करने वाला गुण होता है।

११. डायरियाके लिए तुलसीकी २०-२५ पत्तियां और ५ ग्राम जीरा दोनोंको पीसकर शहदमें मिलाकर उसका सेवन करें।

हमारी आधुनिक सुविधाएं

आप हमारी वेब साइट पर निम्नलिखित जानकारी पा सकते हैं ।

१. श्री ५ नवतनपुरी धामकी पांचों आरतीके दर्शन- मंगल आरती प्रातः ०५.१५ बजे, शृंगार आरती प्रातः ०९.१५ बजे, थालभोग आरती ११.१५ बजे, संध्या आरती सायं ०६.४५ बजे, शयन आरती रात्रि ०८.३० बजे ।

२. श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका प्रति माह दिनांक १७ को अपलोड होती है । आप प्रकाशित लेख पढ़ सकते हैं एवं अपना लेख भेज सकते हैं ।

३. हर रविवारको साप्ताहिक प्रणामी ई-पत्रिका सभीको ई-मेल द्वारा भेजी जाती है । प्रणामी ई-पत्रिका पढ़नेके लिए अपना ई-मेल आईडी हमारे निम्न ई-मेलमें भेज सकते हैं ।

४. श्री ५ नवतनपुरी धाममें मनाये जानेवाले उत्सवोंका सीधा (लाइव) प्रसारण । यथा- श्री प्राणनाथजी प्राकट्य महोत्सव, छठ्ठी उत्सव, सद्‌गुरु जयन्ती एवं शरद पूर्णिमा महोत्सव, जन्माष्टमी, राधाष्टमी, गुरुपूर्णिमा, वीतक कथा, श्रीमद्‌भागवत कथा, पूज्य आचार्य महाराज श्रीजीका जन्मउत्सव तथा प्रत्येक पूनममें महाराजश्रीजीके प्रवचनका सीधा प्रसारण..... इत्यादि ।

५. समय समय पर परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके प्रवचन तथा आशीर्वचनके वीडीओ ।

६. श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिरोंकी सूचि एवं पता ।

७. पूज्य आचार्य महाराजश्रीका Blog

८. सायं ५ से ६ बजे तक pranami tv के माध्यमसे प्रवचनका सीधा प्रसारण भी देख सकते हैं एवं प्रतिदिन श्री तारतम सागरका प्रशिक्षण भी प्राप्त कर सकते हैं ।

Google & youtube : pranami tv / navtanpuri
Website : www.krishnapranami.org
E-mail : navtanpuri@krishnapranami.org
patrika@krishnapranami.org
Contact number : 9714009607 / 9374122228
"Pranami tv का App" Android में Google play और Apple में App Store द्वारा krishna pranami App डाउनलोड कर सकते हैं।

दृष्टान्त

एक गांवमें कृष्णाबाई नामकी बुढ़िया रहती थी वह श्री कृष्णकी परम भक्त थी। वह एक झोपड़ीमें रहती थी। कृष्णाबाईका वास्तविक नाम सुखिया था पर कृष्णभक्तिके कारण इनका नाम गांववालोंने कृष्णाबाई रख दिया। घर-घरमें झाड़ू, पोछा बर्तन और खाना बनाना ही इनका काम था। कृष्णाबाई रोज फूलोंकी माला बनाकर दोनों समय श्री कृष्णजीको पहनाती थी और घण्टों तक कान्हासे बात करती थी। गांवके लोग यहीं सोचते थे कि बुढ़िया पागल है।

एक रात श्री कृष्णजीने अपनी भक्त कृष्णाबाईसे यह कहा कि कल बहुत बड़ा भूचाल आने वाला है तुम यह गांव छोड़कर दूसरे गांव चली जाओ। अब क्या था मालिकका आदेश पाते ही कृष्णाबाईने अपना सामान इकट्ठा करना शुरू किया और गांववालोंको बताया कि कल सपनेमें कान्हा आए थे और कहा कि यहाँ बहुत बड़ा भूचाल होगा तुम पासके गावमें चली जा।

अब लोग कहाँ उस बूढ़ि पागलकी बात मानने वाले जो सुनता वहीं जोर जोर ठहाके लगाता। इतनेमें बाईने एक बैलगाड़ी मंगाई और अपने कान्हाकी मूर्ति ली और सामानकी गठरी बांध कर गाड़ीमें बैठ गई। गांवके लोग उसकी मूर्खता पर हंसते रहे।

बाई जाने लगी बिल्कुल अपने गांवकी सीमा पार कर अगले

गांवमें प्रवेश करने ही वाली थी कि उसे कृष्णकी आवाज आई - अरे पगली जा अपनी झोपड़ीमेंसे वह सुई ले आ जिससे तू माला बनाकर मुझे पहनाती है। यह सुनकर बाई बेचैन हो गई तड़प गई कि मुझसे भारी भूल कैसे हो गई अब मैं कान्हाकी माला कैसे बनाऊंगी ? उसने गाड़ीवालेको वहाँ रोका और सहसा अपने झोपड़ीकी तरफ भागी।

गांववाले उसके पागलपनको देखते और खूब मजाक उडाते। बाईने झोपड़ीमें तिनकोंमें फंसे सुईको निकाला और फिर पागलोंकी तरह दौड़ते हुए गाड़ीके पास आई। गाड़ीवालेने कहा कि माई तू क्यों परेशान हैं कुछ नहीं होना। बाईने कहा अच्छा चल अब अपने गांवकी सीमा पार कर। गाड़ीवालेने ठीक ऐसे ही किया।

अरे यह क्या ? जैसे ही सीमा पार हुई पूरा गांव ही धरतीमें समा गया। सबकुछ जलमग्न हो गया। गाड़ीवाला भी अटूट कृष्ण भक्त था। येन केन प्रकरेण प्रभुने उसकी भी रक्षा करनेमें कोई विलम्ब नहीं किया।

इस दृष्टांतसे हमें यह शिक्षा मिलती है कि प्रभु जब अपने भक्तकी एक सुईतककी इतनी चिंता करते हैं, तो वह भक्तकी रक्षाकेलिए कितना चिंतित होते होंगे। जब तक उस भक्तकी एक सुई उस गांवमें थी पूरा गांव बचा था। इसीलिए कहा जाता है कि 'भरी बदरिया पापकी बरसन लगे अंगार ! संत न होते जगतमें जल जाता संसार।'

संकलन - योगी

श्री ५ नवतनपुरी धामकी-विविध सेवा

- **पारायण -**

१. एक दिवसीय (गोटा)	₹ २५००/-
२. त्रि-दिवसीय (अखण्ड)	₹ ५१००/-
३. सात दिवसीय (साप्ताहिक)	₹ २१००/-
४. महेर सागरके १०८ पाठ	₹ ११००/-
५. विरहके ६ प्रकरणोंके १०८ पाठ	₹ ५५१/-

• श्री राजश्यामाजीके लिए भोग-आरतीकी सेवा -

१. श्री राजश्यामाजीके लिए राजभोग (दैनिक)	₹ ११००/-
२. श्री राजश्यामाजीके बालभोग (दैनिक)	₹ ५००/-
३. प्रतिवर्ष जन्म तिथि / पुण्यतिथि पर आरतीके लिए	₹ ११०००/-
४. श्री राजश्यामाजीके लिए अखण्ड दीपककी सेवा	₹ ११००/-
५. पाँच आरतीके लिए घीकी सेवा (मासिक)	₹ १५००/-
६. मानताके लिए प्रार्थना सेवा (एक दिन)	₹ ५००/-

• रसोई (भोजन-भण्डारा) तथा अल्पाहार सेवा -

१. पक्की रसोई एवं विशेष अल्पाहार-वस्तु, प्रकार तथा मात्रा अनुरूप खर्च होगा।

२. सुनिश्चित पक्की रसोई(मेवा मिष्ठान्न सहित)	₹ ११०००/-
३. सुनिश्चित सादी रसोई (मेवा मिष्ठान्न बिना)	₹ ५१००/-
४. अल्पाहार तथा जलपान (सामान्य)	₹ २१००/-

• श्री कृष्ण प्रणामी औषधालय -

१. मेडिकल केम्प(एक कैम्प)	₹ ११,०००/-
२. औषधालयकी सेवा (प्रति दिन)	₹ ११,००/-
३. साधु, सन्त तथा विद्यार्थी सहाय कोष न्यूनतम	₹ ११,००/-
४. मंदिरके शिखर पर ध्वजा चढानेकी सेवा	₹ ५१००/-

• श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका -

१. पत्रिकाके एक अंकके प्रकाशनकी सेवा	₹ ३०,०००/-
२. सदस्यता शुल्क १५ वर्षीय	₹ १५००/-
३. सदस्यता शुल्क वार्षिक	₹ १५०/-

गाय दान सेवा -

१. गौशालाका एक दिनका पूरा खर्च	₹ ११,०००/-
२. दूध देनेवाली गाय (एक)	₹ १५,०००/-
३. छोटी बछडी (एक)	₹ ७, ५००/-

प्रणामी ग्लोबल स्कूलमें कोरोना वेक्सीनेशनका कार्यक्रम
(दिनांक - ०१/०५/२०२१)

RNI NO. GUJBIL/2006/18311, Postal Reg.No.Jam/GJN-1/2020-21
Validity : Upto 31-12-2023, Date of Publication : 10th of Every Month, Date of Posting : 16th of Every Month
Subscription : Annual Rs.150/-, 15 Years Rs.1500/-, No. of Pages : 36

पटेल समाज जामनगर द्वारा संचालित कोविड केयर सेन्टर का उद्घाटन

श्री १०८ पारायण सेवा-श्री बाईजीराज महिलामंडल श्री 5 नवतनपुरी धाम